

# डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 1, धर्म के दर्शन का परिचय

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 1 है, धर्म के दर्शन का परिचय।

नमस्ते और धर्म के दर्शनशास्त्र में हमारे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। मैं जिम स्पीगल हूँ। मैं दर्शनशास्त्र में पीएचडी हूँ, जो धर्म और नैतिकता के दर्शन में माहिर हूँ, और मैंने इन दोनों क्षेत्रों में प्रकाशन किया है।

धर्म के दर्शन में मेरी मुख्य रुचि और विद्वत्तापूर्ण खोज प्रोविडेंस के सिद्धांत के साथ-साथ नरक के सिद्धांत से संबंधित है। ये दो मुद्दे हैं जिनके बारे में हम यहाँ कई अन्य मुद्दों के साथ बात करेंगे। तो, आइए धर्म के दर्शन के मूल परिचय से ही शुरुआत करें।

यह क्या है? धर्म का दर्शन विभिन्न धार्मिक परंपराओं और विश्वासों के लिए प्रासंगिक अवधारणाओं, विचारों और तर्कों की दार्शनिक परीक्षा है। इसमें उन अवधारणाओं और मुद्दों का आलोचनात्मक विश्लेषण शामिल है जो धार्मिक विश्वास और व्यवहार दोनों के लिए प्रासंगिक हैं। इसे दार्शनिक धर्मशास्त्र कहे जाने वाले तत्व भी माना जा सकता है।

दार्शनिक धर्मशास्त्र में किसी विशेष धार्मिक परंपरा के भीतर अवधारणाओं और सिद्धांतों की दार्शनिक या आलोचनात्मक जांच शामिल है। उदाहरण के लिए, ईसाई धर्म के भीतर, प्रायश्चित के तर्क की बारीकी से जांच या जांच होती है, या नरक या विशेष दैवीय गुणों के सिद्धांत की जांच होती है। तो यहाँ उन मुद्दों का अवलोकन है जिनके बारे में हम बात करेंगे।

हम ईश्वर के पक्ष में कई तर्कों, ईश्वर के पक्ष में तर्कों को देखकर शुरू करेंगे, जिन्हें कभी-कभी ईश्वरवादी प्रमाण कहा जाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इन तर्कों की ताकत के बारे में कितने आश्वस्त हैं। और ऐसे कई तर्क हैं। ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क ईश्वर के अस्तित्व के लिए तर्क है जो ब्रह्माण्ड के पहले कारण की आवश्यकता पर आधारित है।

उद्देश्यवादी तर्क या डिजाइन से तर्क। ईश्वर के अस्तित्व के लिए नैतिक तर्क। मन या चेतना से तर्क।

एक तर्क है ऑन्टोलॉजिकल तर्क, जो केवल इस विचार से तर्क करता है कि ईश्वर एक परिपूर्ण प्राणी है और उसमें सर्वशक्तिमानता, सर्वज्ञता और सर्व-कृपा सहित सभी परिपूर्णताएँ हैं। इसलिए, कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि सबसे परिपूर्ण होने के नाते, उसके पास अस्तित्व की पूर्णता भी होनी चाहिए। हम धार्मिक विश्वास के लिए व्यावहारिक या व्यावहारिक तर्कों के बारे में भी बात करेंगे, जिन्हें कभी-कभी ईश्वर में विश्वास करने के लिए विवेकपूर्ण कारण कहा जाता है।

तो, हमारे पास ईश्वर के अस्तित्व के लिए कई तर्क होंगे जिन पर हम विचार करेंगे, और साथ ही हम उन तर्कों पर आपत्तियों पर भी विचार करेंगे। हम खास तौर पर नास्तिकता और नए नास्तिकता के बारे में बात करेंगे, जो पिछले 10 या 15 सालों में एक सांस्कृतिक आंदोलन बन गया है, और उस आंदोलन के कुछ नेता और ऐसा क्यों है कि वे इतने आश्वस्त हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं हो सकता या ईश्वर का होना ही नहीं चाहिए या क्यों, रिचर्ड डॉकिंस के अनुसार, यह लगभग 99% संभावना है कि ईश्वर नहीं है। तो, हम नए नास्तिकता के बारे में बात करेंगे।

हम सुधारित ज्ञानमीमांसा नामक किसी चीज़ के बारे में बात करेंगे, जो मूल रूप से यह दृष्टिकोण रखती है कि आपको ईश्वर में अपने विश्वास को सही ठहराने के लिए तर्कों की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर में अपने विश्वास को तर्कसंगत बनाने के लिए आपको सबूतों की आवश्यकता नहीं है। यह आस्तिक के लिए एक उचित शुरुआती बिंदु या एक बुनियादी विश्वास है।

आप ईश्वर में विश्वास को एक बुनियादी धारणा के रूप में मान सकते हैं, और सुधारवादी ज्ञानमीमांसक के अनुसार यह अभी भी तर्कसंगत है। हम धार्मिक विश्वास के प्रति सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली आपत्ति के बारे में बात करने में भी कुछ समय बिताएंगे, जो बुराई की समस्या है। यह कैसे संभव है कि एक सर्वशक्तिमान, सर्व-भला, सर्वज्ञ ईश्वर इस दुनिया में इतनी व्यापक पीड़ा और अनैतिकता की अनुमति दे सकता है? यही बुराई की समस्या है। धार्मिक आस्तिक उस आपत्ति का उत्तर देने के लिए क्या जवाब दे सकते हैं? क्या बुराई की समस्या का कोई समाधान है? हम कई तथाकथित थियोडिसीज़ या मार्गों को देखेंगे जिन्हें दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों ने यह दिखाने के लिए अपनाया है कि यह मानने का अच्छा कारण है कि ईश्वर इस दुनिया में बुराई की अनुमति देना चाहेगा।

बुराई की समस्या से संबंधित, कुछ लोग कहेंगे कि बुराई की समस्या के अंतर्गत ईश्वरीय गुप्तता की समस्या भी शामिल है। यदि ईश्वर का अस्तित्व है, तो उसका अस्तित्व इतना अस्पष्ट क्यों है? यह अधिक निश्चित और स्पष्ट क्यों नहीं है कि ईश्वर वास्तविक है? कई लोग इसे अपने आप में एक तरह की आपत्ति मानते हैं। यह तथ्य कि ईश्वर छिपा हुआ है, ईश्वरवादी विश्वास के विरुद्ध प्रतीत होता है क्योंकि यदि वह अस्तित्व में है, तो क्या वह नहीं चाहेगा कि हर कोई यह निश्चित रूप से जाने? हमें अपने इस विश्वास को स्थापित करने के लिए इतना तर्क और जांच क्यों करनी होगी कि ईश्वर का अस्तित्व है? हम कई कोणों से नरक के सिद्धांत के बारे में भी बात करेंगे।

एक, बुराई की समस्या के एक पहलू के रूप में, क्या नरक की वास्तविकता धार्मिक विश्वास के खिलाफ एक तरह का सबूत है? हम नरक की समस्या या नरक के सिद्धांत के बारे में भी बात करेंगे, बस इस संदर्भ में कि अगर नरक है, तो हम नरक की प्रकृति को कैसे समझ सकते हैं, और विशेष रूप से शापित लोगों के लिए पीड़ा कितनी देर तक रहती है? क्या हर कोई अंततः बच जाता है, जैसा कि सार्वभौमिकवादी कहते हैं, या लोग इसके बिना हमेशा नरक में पीड़ित रहते हैं? क्या यह शापित लोगों के लिए अनंत यातना है, जैसा कि ऑगस्टीन के बाद से पारंपरिक दृष्टिकोण है? या, सशर्त अमरतावाद या विनाशवाद नामक एक कम-ज्ञात दृष्टिकोण के अनुसार, क्या नरक उन लोगों की पीड़ा की अवधि के संदर्भ में सीमित है जो नरक में हैं, या कम से कम नरक में रहने वाले कई लोग अंततः अस्तित्व से बाहर हो जाते हैं? क्या वे अंततः नष्ट हो जाते हैं और उस शून्यता में वापस चले जाते हैं जहाँ से वे आए थे? हम धार्मिक बहुलवाद और इस सवाल

के बारे में भी बात करेंगे कि क्या एक धर्म या धार्मिक परंपरा इस अर्थ में विशेष रूप से सत्य है कि यह ईश्वर तक पहुँचने और मोक्ष पाने का एकमात्र तरीका है। या फिर क्या कई अलग-अलग धर्म संभावित रूप से विश्वासियों को ईश्वर के पास लाने और अंतिम मोक्ष तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त हैं? हम चमत्कारों के सिद्धांत और इस पूरे विचार के बारे में बात करेंगे कि ईश्वर विभिन्न समय और स्थानों पर चमत्कारी कार्य करता है। यह मानना कितना तर्कसंगत है कि किसी विशेष स्थिति में चमत्कार हुआ है? क्या यह मानना विज्ञान या वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मौलिक रूप से विरोधाभासी है कि ईश्वर चमत्कार करता है? और कब, यदि कभी, हम यह मानने में उचित हैं कि किसी व्यक्ति के उपचार में वास्तव में चमत्कारी ईश्वरीय हस्तक्षेप शामिल है? और यदि ऐसी चीजें होती हैं, तो क्या वे कभी या हमेशा प्रकृति के नियमों का उल्लंघन होती हैं? हम विज्ञान और धर्मशास्त्र के बीच के संबंध के बारे में बात करेंगे।

क्या यहाँ अनुभवजन्य जांच, वैज्ञानिक पद्धति और धार्मिक विश्वास के बीच कोई तनाव है? क्या ये दोनों चीजें संगत हैं? यदि वे संगत हैं, तो क्या यह सच है, जैसा कि कुछ लोगों ने तर्क दिया है, कि वास्तव में, एक धार्मिक दृष्टिकोण विज्ञान के लिए सबसे अच्छा दृष्टिकोण या विश्वदृष्टि संदर्भ प्रदान करता है? कई लोगों ने तर्क दिया है कि वास्तव में, विज्ञान सबसे अच्छा किया जाता है; यह धार्मिक विश्वास के संदर्भ में सबसे उचित रूप से संचालित होता है। हम प्रोविडेंस के सिद्धांत के बारे में भी बात करेंगे, जिसका संबंध सृष्टि के लिए ईश्वर की देखभाल और दुनिया पर उसके नियंत्रण से है। यह कितना व्यापक है? ईश्वर किस हद तक इतिहास और व्यक्तिगत मानव जीवन का मार्गदर्शन करता है? क्या सिस्टम में कोई ऐसा खेल है जिससे ईश्वर कुछ चीजों को अपने आप चलने देता है? या शायद वह पूरे ब्रह्मांड को अपने आप चलने देता है, और वह बिल्कुल भी हस्तक्षेप नहीं करता है, जैसा कि अधिक, कहें तो, ईश्वरवादी दृष्टिकोण वाले लोग कहेंगे।

तो, हम प्रोविडेंस के सिद्धांत को देखेंगे, और फिर हम ईसाई धार्मिक परंपरा के भीतर कुछ प्रमुख सिद्धांतों के बारे में बात करके निष्कर्ष निकालेंगे: दिव्य अवतार और दिव्य त्रिमूर्ति। दिव्य अवतार का संबंध दार्शनिक समस्याओं से है जो यीशु मसीह के मानव और दिव्य दोनों होने के सिद्धांत के संदर्भ में उत्पन्न होती हैं, है न? भगवान मानव बन गए, और उन्होंने अवतार लिया। यह विरोधाभास कैसे नहीं है? हम अपनी मान्यताओं, इन दो मान्यताओं, कि यीशु पूरी तरह से मानव और पूरी तरह से दिव्य थे, को कैसे समेट सकते हैं? क्या उन्हें समेटा जा सकता है? और फिर, त्रिमूर्ति के संबंध में, हम कैसे, एक सुसंगत तरीके से, यह बनाए रख सकते हैं कि भगवान एक ही व्यक्ति हैं और फिर भी तीन व्यक्ति हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक साथ? क्या यह विरोधाभास है? जैसा कि हमारे मुस्लिम मित्र और अन्य लोग मानते हैं, यह अंततः बहुदेववाद में विश्वास करना है।

क्या हम तर्कसंगत रूप से यह मान सकते हैं कि ईश्वर तीन व्यक्ति हैं और फिर भी एक ईश्वर है? यह कैसे संभव है? तो ये वे मुद्दे हैं जिन पर हम चर्चा करेंगे। हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल हैं जो धर्म के दर्शन पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1 है, धर्म के दर्शन का परिचय।